Mahila college. Dalmianagar (Rohtas)

page. I.

B.A. II (Hons)

Topic- शोध समस्या

Research problem

Date 23/02/2024

Psychology

Kusum Kumari

शोध समस्या का अर्थ एवं विशेषताएँ :-

(Meaning and chracteristics of a Research problem)

किसी भी वैज्ञानिक तथा भौतिक शोध की शुरुआत एक शोध समस्या की स्पष्ट पहचान से होती है। शोध समस्या को स्पष्ट रूप से पहचान कर उल्लेख करना शोधकर्ता (Researcher) के लिए एक कठिन कार्य होता है फिर भी वह अपने अनुभवों एवं पहले किए गए शोधों की समीक्षा (Review) करके ठोस शोध समस्या बन जाता है।

जब शोधकर्ता किसी क्षेत्र में किए गये शोधों की समीक्षा करने पर निष्कर्ष पर पहुँचता है कि विभिन्न लोगों द्वारा किए गए शोधों के परिणाम में असंगता (Inconsistency) है, तो वह इस प्रकार निष्कर्ष पर पहुँचता है कि कोई शोध समस्या मौजूद है। शोध समस्या से तात्पर्य क्या होता है? शोध समस्या एक ऐसी समस्या होती है जिसके द्वारा दो या दो से अधिक चरों (variables) के बीच एक प्रश्नात्मक सम्बन्ध (Interrogative Relationship) की अभिव्यक्ति होती है।

करलिंगर (Kerlinger, 1986) द्वारा शोध समस्या को कुछ इसी अर्थ में परिभाषित किया गया है,

P.T.O

"समस्या एक ऐसा प्रश्नात्मक वाक्य या कथन है जो प्रायः बताता है - दो या दो से अधिक चरों के बीच कैसा सम्बन्ध है"

यदि इस परिभाषा का विश्लेषण किया जाय तो हम पायेंगे कि शोध समस्या के कथन की कुछ विशेषताएँ हैं जो निम्नांकित हैं :-

(i) समस्या कथन (Problem statement) की अभिव्यक्ति प्रश्नात्मक वाक्य द्वारा होती है ऐसा वाक्य जो बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में लिखा जाता है उदाहरण स्वरूप —

(क) छात्रों के निष्पादन (classroom achievement) तथा बुद्धलब्धि (IQ) में क्या सम्बन्ध होता है?

(ख) स्कूल में छात्रों में दुश्चिंता (Anxiety) तथा बु (Intelligence) में क्या सम्बन्ध होता है?

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि शोध समस्या के कथन स्पष्ट रूप से एक प्रश्नात्मक रू में अभिव्यक्त होते हैं। कथन से स्पष्ट होता है कि उसमें कुछ पूछा जा रहा है जिसका उत्तर शोध करने के बाद ही दिया जा सकता है। कभी-कभी शोध-समस्या की अभिव्यक्ति एक प्रश्नात्मक रू में न करके साधारण रूप में भी कर दी जाती है

(ii) शोध-कथन द्वारा दो या दो से अधिक चरों के के बीच के सम्बन्ध की अभिव्यक्ति होती है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि शोध-समस्या के कथन को अभिव्यक्त करने से पहले शोधकर्ता को चरों (Variab के बारे में एक निर्णय ले लेना पड़ता है।

P.T.O

(ii) शोध-समस्या को वैज्ञानिक होने के लिए यह भी आवश्यक है कि उसका सम्बन्ध महत्वपूर्ण विषयों या घटनाओं से हो न कि तुच्छ विषयों या घटनाओं से। शोध-संमस्या का स्वरूप ऐसा ही होना चाहिए कि उसे जाँच करने में अत्यधिक समय या धन का व्यय न हो।

(iii) शोध समस्या को न ही अत्यधिक सामान्य (Too genral) और न ही अत्यधिक विशिष्ट (Too specific) होना चाहिए। उदाहरण, 'शोध समस्या का कथन मैस्लो - क्या सर्जनात्मक (creactivity) व्यक्ति की आत्म-वास्तविकता (self-actualization) द्वारा प्रभावित होती है। करलिंगर ने भी कहा है "अगर समस्या अत्यधिक सामान्य है, तो वह इतनी अस्पष्ट हो जाती है कि उसकी जाँच नहीं की जा सकती है। इस प्रकार से वैज्ञानिक रूप से वह अर्थहीन हो जाता है।" उसी तरह से यदि कोई समस्या अत्यधिक विशिष्ट हो जाती है तो वह भी शोध के दृष्टिकोण से बेकार एवं अर्थहीन हो जाती है क्योंकि ऐसी शोध-समस्या के अध्ययन से कोई अर्थपूर्ण सामान्यीकरण नहीं हो पाता है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि शोध-समस्या एक प्रश्नात्मक कथन के ~~रूप~~ में व्यक्त की जाती है। शोध-समस्या को वैज्ञानिक कहलाने के लिए कुछ भी विशेष जरूरतों का पूरा होना अनिवार्य है।

जैसे! - उदाहरण में पहले कथन में वर्ग कि अपराधी तथा बुद्धि लब्धि दो चर हैं। उसी तरह दूसरे कथन में भी दुश्चिन्ता (anxiety) तथा बुद्धि (intelligence) दो चर हैं। चर की पहचान कर लेने के बाद दोनों के बीच एक विशेष सम्बन्ध की उक्ति की जाती है।

(iii) शोध समस्या का कथन (Statment) ऐसा होना चाहिए जिसे आनुभविक विधियों से जाँच किया जाना सम्भव हो। दूसरे शब्दों में शोध समस्या का कथन ऐसा होना चाहिए कि उसके चरों की माप आँकड़ों (data) का संग्रह (collection) करके किया जाना सम्भव हो सके।

इन प्रमुख विशेषताओं के अलावा कुछ और भी वांछनीय विशेषताएँ बतलाई गयी हैं जिनमें शोध-समस्या का स्वरूप (Nature) स्पष्ट हो जाता है। ऐसी प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित हैं —

(i) किसी शोध समस्या को नैतिक (moral) मूल्यों से या निर्णय (judgement) से सम्बन्धित नहीं होना चाहिए क्योंकि ऐसी शोध-समस्याओं का अध्ययन करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

जैसे!— क्या विधवा-विवाह सम्पन्न होना चाहिए? क्या व्यक्ति को सभी परिस्थितियों में सच बोलना चाहिए? आदि कुछ ऐसे प्रश्नात्मक कथन हैं जिनका अध्ययन करना काफी कठिन है।